जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मतन्मयता ही आत्मानुभूति का उपाय है।
– बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ – 24

वर्ष : 26, अंक : 17 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

कुरावली–मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ 1008 श्री आदिनाथ जिनालय, कुरावली द्वारा शनिवार, दिनांक 8 नवम्बर से शुक्रवार, दिनांक 14 नवम्बर, 2003 तक 1008 श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर 1008 श्री नेमिनाथ भगवान की मनोहारी प्रतिमा को गजरथ महोत्सवपूर्वक विराजमान किया गया।

इस मंगलमय प्रसंग पर **108 आचार्य श्री धर्मभूषणजी महाराज के परम शिष्य 108 मुनि श्री सम्यक्त्वभूषणजी महाराज** के आध्यात्मिक प्रवचनों का समागम प्राप्त हुआ तथा साथ ही पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. योगेशकुमारजी जैन अलीगंज, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित अशोककुमारजी जैन सिरसागंज आदि के मार्मिक प्रवचनों का लाभ भी आगन्तुक महानुभावों को प्राप्त हुआ।

पंचकल्याणक महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियाधांना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, डॉ. अरविन्दजी जैन करहल, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित अभिनवजी मोदी मैनपुरी, पण्डित नवीनकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित अभिनयकुमारजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित संतोषकुमारजी साहु अबंड ने सम्पन्न करायी।

इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिल्ली से नेमि-राजुल नाटक का सुन्दर प्रस्तुतिकरण किया गया। तथा संगीतकार रवीन्द्र जैन, मुम्बई द्वारा भक्ति संध्या आयोजित की गई।

मोक्ष कल्याणक के अवसर पर ललितपुर से आये हुये तीन मंजिल रथ पर गजरथ महोत्सव का आयोजन किया गया, जो सभी के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

पण्डित टोडरमल संगीत सरिता, जयपुर तथा सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा द्वारा प्रासंगिक भजनों के प्रस्तुतिकरण द्वारा जनसामान्य को भक्ति रस का आस्वादन कराया गया।

सम्पूर्ण आयोजन में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मैनपुरी का सक्रिय सहयोग रहा।

दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में दिल्ली, कानपुर, भोपाल, इलाहबाद, आगरा, फिरोजाबाद, भोगांव, कायमगंज, अलीगढ़, भिण्ड, इटावा, सिरसागंज, करहल, एत्मादपुर, एटा, पालनपुर, लखनऊ, घिरोर, अलीगंज, अजमेर आदि स्थानों से अनेक साधर्मी पधारे। जिन्होंने अत्यन्त उत्साह व भक्तिपूर्वक सम्पूर्ण कार्यक्रमों का लाभ लिया।

नागपुर में धर्म प्रभावना

नागपुर (महा.) : दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल नागपुर की अनेक वर्षों की मांग के फलस्वरूप यहाँ भगवान महावीर दिग. जैन मंदिर, इतवारी में बाल ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर पधारे। आपके द्वारा दिनांक 5 नवम्बर से 14 नवम्बर 2003 तक गुणस्थान विवेचन पर प्रवचन हुये। प्रवचनों में मुख्यत: चतुर्थ एवं पंचम गुणस्थान की चर्चा की गई।

इस अवसर पर अनेक लोगों द्वारा कण्ठस्थ किये गये विषयों को ब्र. यशपालजी ने सुना तथा उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक भी प्रदान किया।

इसीप्रसंग पर नागपुर मुमुक्षु मण्डल द्वारा महाराष्ट्र में तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के संबंध में विचार विमर्श किया गया तथा इस संबंध में एक योजना भी तैयार हुई, जिसकी सूचना आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

श्री राजेन्द्र के. गोधा को हार्दिक बधाई !

जयपुर : दिगम्बर जैन महासमिति पत्रिका के सह-संपादक तथा **समाचार जगत** दैनिक अखबार के संस्थापक एवं प्रबन्ध संपादक श्री राजेन्द्र के. गोधा को दिनांक 23 अक्टूबर 2003 को महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंहजी शेखावत द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में **लाईफ टाईम अचीवमेण्ट अवार्ड** से सम्मानित किया गया।

आपकी इस उपलब्धी हेतु जैनपथ-प्रदर्शक एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, परिवार द्वारा आपको हार्दिक बधाई !

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा 40

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

एक बार शीलव्रतधारी राजा शीलायुध तपस्वियों के उस आश्रम में पहुँचा, जहाँ ऋषिदत्ता रहती थी। ऋषिदत्ता ने उसे भोजन कराकर आदर सत्कार किया। कन्या सुन्दर तो थी ही, वे दोनों एक–दूसरे पर आकर्षित हो गये और उन्होंने अपने–अपने शीलव्रत की मर्यादा तोड़ दी। इसीलिए तो ज्ञानी कहते हैं, *व्रतों को धारण करने की जल्दी मत करो। परिपक्व होकर भूमिका के अनुसार जो व्रत होंगे वे ही निर्दोष पलेंगे। व्रत न लेने का कम दोष है और व्रतों को भंग करना महापाप है। परन्तु जिसकी जैसी होनहार हो उसे कौन टाल सकता है।''*

शीलव्रत भंग होने पर ऋषिदत्ता ने राजा शीलायुध से पूछा ह्न मैं ऋतुमति हूँ, यदि गर्भवती हो गई तो मुझे क्या करना होगा?

राजा शीलायुध ने कहा ह्न ''मैं श्रीवास्ती का राजा हूँ। तुम पुत्र जन्म होने पर श्रीवास्ती आकर मुझसे मिलना।'' ऐसा आश्वासन देकर वह प्रस्थान करने वाला ही था कि उसकी सेना आश्रम में आ पहुँची। सेना को देख वह बहुत संतुष्ट हुआ और सेना के साथ नगर को लौट गया।

राजा के चले जाने के बाद लोक व्यवहार में निपुण ऋषिदत्ता ने लज्जा छोड़कर राजा के साथ हुए सम्बन्ध का वृतांत माता–पिता से कह दिया। यह भी कह दिया कि ''मैं गर्भवती हो गई हूँ।'' वह ऋषिदत्ता प्रसूति करते ही मर गई और वल्लभा नाम की 'नागकुमारी' देवी हुई। उसे देव पर्याय में भवप्रत्यय अवधिज्ञान से ज्ञात हो गया कि ''मैं उसी ऋषिदत्ता का जीव हूँ, जो छोटे से बालक को छोड़कर मरकर यह *नागकुमारी* हुई हूँ। अतः वह *नागकुमारी* दया और स्नेह के वशीभूत हो पिता और पुत्र के तपोवन में गई। वहाँ शोक संतप्त माता पिता को आश्वस्त करके और अपने पूर्वभव के पुत्र को मृगी का रूप धर कर दूध पिला–पिला कर बड़ा किया। तत्पश्चात् तापसी का वेश धर कर और उस पुत्र को लेकर पूर्वभव के पति राजा शीलायुध के पास गई।

राजा शीलायुध विभूति सम्पन्न और नीतिज्ञ था। नागकुमारी देवी द्वारा पुत्र प्राप्त होने का रहस्यमय वृतान्त जानकर वह प्रसन्न हुआ और उसने पुत्र को युवराज के रूप में स्वीकार कर लिया। पुत्र का नाम एणीपुत्र था। पूर्व पर्याय के पुत्र के मोहवश नागकुमारी देवी होकर भी उसकी रक्षा में तत्पर रही।

पिता के स्वर्गवासी होने पर एणीपुत्र राजा बना। कालान्तर में उस एणीपुत्र के एक सर्वगुण सम्पन्न प्रियंगुसुन्दरी नामक कन्या हुई। एणीपुत्र ने उसका स्वयंवर रचा; किन्तु काम–भोग से विरक्त प्रियंगुसुन्दरी ने उस समय सर्व आगंतुक राजकुमारों को निरस्त कर दिया; पर जब उसने बन्धुमती के साथ कुमार वसुदेव को देखा तो उसका मन उसकी ओर आकृष्ट हो गया। अन्ततः कामदेव के मन्दिर में वसुदेव और प्रियंगुसुन्दरी का समागम हो गया और वे श्रीवास्ती नगरी में बहुत समय तक दाम्पत्य सुख भोगते रहे।

वसुदेव ने नागकुमारी से यह सब पूर्वभव के संस्कारों से चले आये संबंध को जाना और उससे उत्पन्न स्नेहवश जब नागकुमारी द्वारा अपने योग्य सेवा करने हेतु स्मरण करने को कहा गया तो वसुदेव ने यह कहा ह्न ''जब मैं याद करूँ, तब तुम मेरा ध्यान रखना।'' 'एवमस्तु' कहकर वह नागकुमारी चली गई।

इसप्रकार वह ऋषिदत्ता जो मरकर वल्लभा नामक नागकुमारी देवी हुई, उसने वसुदेव को प्रियंगुसुन्दरी का तथा उसके पिता एणीपुत्र एवं एणीपुत्र की माँ ऋषिदत्ता आदि का परिचय दिया।

ये कथानक पाठकों को जीवों की विचित्र परिणति और संसार की असारता का संदेश देते हैं, जिनकी भली होनहार होती है, वे सुलट भी जाते हैं। इसतरह ये पौराणिक कथायें भी जीवों के कल्याण की कारण बनती हैं। यही मंगल भावना है कि पाठक विचित्र वस्तु स्थितियों से प्रेरणा पाकर अपना कल्याण करें। ●

हम कभी सोच भी नहीं सकते कि अपने द्वारा किए शुभाशुभ भावों का फल किन–किन रूपों में सामने आता है। जगत के जीव कभी आसमान में उड़ते नजर आते हैं तो कभी धरती की धूल चांटते दिखाई देते हैं।

कुमार वसुदेव के प्रियंगुसुन्दरी आदि अनेक सुन्दरतम राज कन्याओं के साथ अनेक विवाह हुए। उनके साथ चिरकाल तक रहकर कुमार वसुदेव ने लौकिक सुख का अनुभव किया। स्वयंवर में जीतकर अपहृत की गई सोमश्री से पुनर्मिलन हुआ। गांधार नरेश की पुत्री *प्रभावती* से विवाह किया।

पुण्योदय से प्राप्त इन सब अनुकूलताओं के बीच समय–समय पर ऐसा पापोदय भी आया कि शत्रुओं द्वारा अनेक कष्ट दिए गए। सूर्पक द्वारा स्वयं वसुदेव का अपहरण हो गया और उसे गंगा नदी में गिरा दिया गया।

पुनः पुण्योदय से वह गंगानदी से निकलकर तापसों के उस आश्रम में पहुँच गया जहाँ जरासंघ ने अपनी पुत्री केतुमती को तापसों की शरण में रख छोड़ा था; क्योंकि केतुमती किसी पिशाच द्वारा पागल कर दी गई थी और जरासंघ को उस व्यक्ति की तलाश थी, जो उस पिशाच का निग्रह कर सके। कुमार वसुदेव दयालु तो थे ही, उन्हें केतुमती पर दया आ गई और उन्होंने पिशाच का निग्रह करके केतुमती का पागलपन ठीक कर दिया।

कहावत तो ऐसी है कि 'कर भला तो हो भला' परन्तु यदि पुराना पाप आड़े आ जाय तो कभी–कभी उल्टा भी हो जाता है; दूसरों का भला करने पर भी स्वयं का बुरा होता दिखाई देता है; पर ध्यान रहे *भले काम का नतीजा तो भला ही होगा। अतः भला करने से पीछे न हटें।* *(क्रमशः)*

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

25

● आचार्यदेव कहते हैं कि हे भाई ! तेरा आत्मा शुद्ध ज्ञानघन स्वरूप है। उसमें कोई अपंगता या त्रुटि नहीं है। भले ही वह नरक-निगोद में भटका, किन्तु उसमें किंचित मात्र भी त्रुटि न्यूनता नहीं आयी है। इसलिये तू प्रसन्न हो।

● जिसप्रकार लकड़ी की अग्नि में ऊपर से छारी (राख) आ जाती है परन्तु भीतर वह सुलगती रहती है; अग्नि के ऊपर की छारीरूप राख अग्नि से पृथक ही है; उसीप्रकार राग भी चैतन्य की छारी समान होने से चैतन्य से पृथक ही है। जिसप्रकार ऊष्णता और अग्नि एकरूप है, उसीप्रकार ज्ञान और आत्मा एकरूप है।

● ज्ञान में राग ज्ञात होता है; किन्तु यहाँ अज्ञानी यह मान बैठता है कि मैने राग किया। यह राग का कर्तृत्त्व ही मिथ्यादर्शन है।

● व्यवहार रत्नत्रय का शुभभाव भी कर्म का फल है; जिसप्रकार कुलथी (एक प्रकार का अनाज) और बासमती चावल दोनों का क्षेत्र अलग-अलग है, उसीप्रकार राग और आनन्द का क्षेत्र अलग-अलग है। आनंद स्फुरित हो, वह मेरी जाती है। विकल्प उठे वह मेरी जाती का नहीं है ।

● अन्तर में गुण-गुणी भेद का विकल्प उठे तो वह भी कोलाहल है। दूसरों को समझा दूं इसरूप है। प्रभावना का विकल्प उठा वह भी कोलाहल है। यद्यपि ऐसा विकल्प ज्ञानी को भी आता है; परन्तु वह इसे स्वीकार नहीं करता। अत: हमें भी शान्त होकर चैतन्यस्वरूप ज्ञायक को देखना चाहिये। जितने शुभाशुभ विकल्प उठते हैं। वे मुझे लाभदायक हैं - ऐसा मानना मिथ्यात्वभाव है।

● वस्तु शुद्ध है, अभेद है, एक है, लेकिन ऐसा निर्णय किसे हुआ है ? जिसे ज्ञान और प्रतीति में शुद्धता का, अभेदता का अनुभव हुआ है, उसे ही ऐसा निर्णय हो सकता है। वैसे शुद्ध-शुद्ध कहने मात्र से शुद्धता नहीं आती। शुद्धता आने के लिये अपनी ओर झुकाव होना चाहिये। तभी शुद्धता, अभेदता की प्राप्ति होगी।

● यह कार्य तो अनादि से नहीं किया था। यह तो अत्यन्त शांति एवं धैर्य का कार्य है। शरीर-मन-वाणी और उनके विकल्परूप मेरा जीवन नहीं है, यह निर्णय होना चाहिये।

● सर्वज्ञ स्वभाव को सामने रखकर ही अल्पज्ञता में सर्वज्ञता का निर्णय हो सकता है। पर्याय में तो सर्वज्ञता नहीं है तथा दूसरे सर्वज्ञ भगवान मेरे लिये पर है, इसलिये उन्हें सन्मुख रखने से सच्चा निर्णय नहीं हो सकता; किन्तु अपने सर्वज्ञस्वभाव को सन्मुख रखे तो अल्पज्ञता में भी सर्वज्ञता का निर्णय हो सकता है।

● स्वच्छत्व शक्ति के कारण ज्ञान में आर्त-रौद्र ध्यान के परिणाम ज्ञात होते हैं; किन्तु वहाँ स्वच्छत्व शक्ति में अशुद्धता नहीं आती है। जैसे दर्पण में अग्नि दिखाई देने से दर्पण में ऊष्णता नहीं आती, उसीप्रकार ज्ञान में अशुद्धता ज्ञात होने से ज्ञान अशुद्ध नहीं होता, किन्तु ज्ञान में अशुद्धता ज्ञात होने से ज्ञान भी अशुद्ध हुआ - ऐसा जानकर कोई उस ज्ञान को छोड़ना चाहे तो उसने स्वच्छत्व शक्ति के स्वरूप को समझा ही नहीं है।

● जो शुभाशुभरूप परलक्ष्यी वृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं, वे जीव के स्वरूप को नष्ट करती है, इसलिये शुभाशुभ परिणति तो चुडैल के समान है। उसे छूना भी मना है।

● तीर्थंकर भगवान हमें कहते हैं कि तुम हमें भूल जाओ। हमारे प्रति जो राग है उसे भी भूल जाओ तथा तुम्हारे स्वयं में जो गुण-भेद हैं, उन्हें भी भूल जाओ, अभेददृष्टि को अनुभव में लाओ। भेददृष्टि में आकुलता का स्वाद है, गुणभेद का लक्ष्य रखेंगे तो आकुलता का ही अनुभव होगा; किन्तु अभेददृष्टि पर लक्ष करते ही निराकुलता एवं सुख का अनुभव होता है।

● चार शरण तो व्यवहार शरण है, वास्तविक शरण एक मात्र आत्मा ही है। चित्चैतन्य आत्मा सत्स्वरूप है। शाश्वत है वह ज्ञान सृष्टि की रचना करता है और ज्ञान की रचना करते-करते केवलज्ञान की प्राप्ति करता है।

● शास्त्र श्रवण में तथा पठन में हमें यह लक्ष करना चाहिये कि बाह्य की समस्त क्रियाओं का आत्मा में प्रवेश नहीं हो सकता है। शुभभाव अवश्य ही आता है; किन्तु ज्ञानी जीव का उन शुभभावों पर लक्ष्य नहीं होता, उसका लक्ष तो शुद्ध द्रव्य पर होता है।

● धर्मी का वृद्धिंगत होता हुआ ज्ञान बाह्य निमित्त को, राग को, देव-शास्त्र-गुरु को तथा उनकी ओर होनेवाली समस्त वृत्तियों को छोड़ देता है। त्रिलोकीनाथ भगवान ने ऐसा कहा है कि तू हमारी ओर देखना छोड़ दे। तेरा ऐसा स्वभाव नहीं है कि तुझे किसी दूसरे का अवलम्बन लेना पड़े। धर्मी का वृद्धिंगत होता हुआ ज्ञान एक समय की पर्याय का भी आदर नहीं करता है। अपने अखण्ड स्वभाव के सिवा अन्य समस्त बातों को वह पर मानता है।

● ज्ञेय का स्वभाव ज्ञान को ललचाने का नहीं है। तथा ज्ञान का स्वभाव ज्ञेय में ललचने का नहीं है; तथापि ऊपर से जो एक-दूसरे के प्रति ललचने रूप भाव होता है, वह अज्ञान है, मिथ्यात्व है। ज्ञेय को जानने का ज्ञान का स्वभाव है, उसके बदले जिसने अच्छी-बुरी मान्यता बनायी है, उसने ज्ञेय को ज्ञेयरूप जाना ही नहीं है।

● देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति का भाव ज्ञानी को आता है, वह अशुभवंचनार्थ अर्थात् अशुभभाव से बचने के लिये कहा है; परन्तु जिसकी दृष्टि स्वभाव पर नहीं है, उसे तो अभी भी मिथ्यात्व है; अत: वह अशुभभाव से कैसे बचेगा? धर्मी जीव की दृष्टि स्वभाव पर लगी है, उसे अशुभभाव से बचने के लिये शुभराग आता है।

गुड़ एक लाभदायक खाद्य

गुड़ के रासायनिक विश्लेषण से पता चलता है कि इसमें गन्ने के सभी पोषण तत्त्व मौजूद हैं। गुड़ में कैल्शियम, लौहतत्त्व, गंधक, पोटेशियम, फास्फोरस आदि सभी तत्त्व मौजूद होते हैं। चीनी (शक्कर) में ये सभी तत्त्व नष्ट हो जाते है।

गुड़ में प्रोटीन 8 प्रतिशत, वसा 0.9 प्रतिशत, कैल्शियम 0.08 प्रतिशत, फास्फोरस 0.04 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 65 प्रतिशत, और विटामिन-ए 280 युनिट्स प्रति 900 ग्राम होता है।

बहुत लोग पालक में लौहतत्त्व ज्यादा मानते हैं, पर गुड़ में पालक की अपेक्षा लौहतत्त्व अधिक होता है। पालक में 1.3 प्रतिशत, केले में 0.4 प्रतिशत तथा गुड़ में 11.4 प्रतिशत एम.जी. लौहतत्त्व होता है।

महिलाओं में लौहतत्त्व की कमी आमतौर पर पायी जाती है। यह मासीक धर्म की गड़बड़ी से होता है। कई महिलाओं का आयरन कैप्सूल से पेट गड़बड़ हो जाता है। कुछ को दस्त भी लग जाते हैं, उन्हें गुड़ लाभदायक एवं स्वास्थ्यवर्धक है।

गुड़ का सबसे अच्छा खाने का तरीका यह है कि गुनगुने पानी में गुड़ को घोलकर खाली पेट दिया जाये। दोपहर में भोजन के दो घंटे बाद अथवा दोनों समय भोजन के बाद छोटी गुड़ की डली भी खायी जा सकती हैं। गुड़ पट्टी या चिक्की के रूप में भी काफी प्रचलित है। गुड़ को छिलके वाली मूँग की दाल में भी मिलाकर खाया जा सकता है।

कैल्शियम गुड़ में अधिक मात्रा में होने के कारण बच्चों की हड्डी की कमजोरी, दंत-क्षय में यह बहुत लाभकारी है, बढ़ती उम्र के बच्चों के लिये तो गुड़ अमृततुल्य है।

गुड़ में विटामिन-बी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इसमें पेटोथिनिक ॲसिड, इनोसिटाल सर्वोपरी है, जो की मानसिक स्वास्थ के लिये अत्यन्त हितकारी और लाभदायक है।

आयुर्वेद में लिखा है कि दही, मट्ठा, मक्खन, गुड़ सेवन करने वाले को बुढ़ापा कष्ट नहीं देता। पोटेशियम हृदय रोगों में लाभकारी है जो गुड़ में मौजूद होता है। अत्यधिक चीनी (शक्कर) नुकसानदेह है; इसलिए प्राकृतिक शक्कर में गुड़, पिंडखजूर, किशमिश आदि फायदेमंद होने से इनका सेवन करना चाहिये।

घर का वैद्य केला

केला अपने आप में छोटे-मोटे वैद्य या हकीम से कम नहीं है। एक र्किित्सकीय अध्ययन के अनुसार केला अल्कोहोल, एस्पिरिन के स्थानापन्न इंडोमेथासिन एवं पाचन तंत्र में उपस्थित हाइड्रोक्लोरिक अम्ल से पेट के नाजूक परत की रक्षा करता है।

वहीं न्यूट्रीशन एंड कैन्सर तथा यूरोपियन जनरल ऑफ कैन्सर के अनुसार केला खाने से मुख, फेफडे तथा गले के कैन्सर से बचा जा सकता है। केले में पोटेशियम की पर्याप्त मात्रा पायी जाती है, जो मांसपेशियों एवं दिल के सही ढंग से धडकने के लिए जरूरी होता है। अत: एक केला रोज अवश्य ही सेवन करें; किन्तु मधुमेह के रोगी नहीं। ●

आँख होते हुए भी अन्धे कौन ?

1. **मोहान्ध :** कंचन, कामिनी एवं कुटुम्ब के मोहपाश में जकड़ा हुआ प्राणी मोहान्ध है।

2. **कामान्ध :** कामपीड़ा से तीव्र व्याकुल होकर जात-कुजात, नीति-अनीति नहीं जाननेवाला प्राणी कामान्ध है।

3. **पक्षान्ध :** हठपूर्वक खोटे मत का पक्षपात करनेवाला एवं मिथ्यात्व की पुष्टी करनेवाला प्राणी पक्षान्ध है।

4. **मदान्ध :** आठ प्रकार के मदों की पुष्टी करते हुए उसमें निरन्तर लवलीन रहनेवाला प्राणी मदान्ध है।

5. **विषयान्ध :** पाँच इन्द्रिय तथा मन के विषयों में निरन्तर रचा-पचा रहनेवाला जीव विषयान्ध है।

6. **कषायान्ध :** तीव्र कषायवश अथवा कलह के वशीभूत होकर स्व-पर का घात करनेवाला जीव कषायान्ध है।

7. **अज्ञानान्ध :** अन्धविश्वासी बनकर सबकी हाँ में हाँ भरनेवाला स्व-पर के भेदज्ञान से रहित-विवेकहीन प्राणी अज्ञानान्ध है।

प्रश्न : क्या इन अन्धों का कोई इलाज है ?

उत्तर : हाँ ! यदि ज्ञानी गुरु द्वारा सम्यग्ज्ञान की सलाह से तत्त्वज्ञान का सूरमा सुबह-शाम कम से कम छह माह तक लगातार लगाया जावे तो भेदज्ञान के नेत्र खुल सकते हैं और सभी प्रकार के उपरोक्त नेत्ररोग एक-साथ मिट सकते हैं। **ह्न धर्मेन्द्र शास्त्री, बण्डा(संकलनकर्ता)**

शुभकामनायें !

जयपुर (राज.) : श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत कॉलेज एवं श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्र रवीन्द्र काले, कारंजा ने राज्यस्तरीय हिन्दी वादविवाद प्रतियोगिता में एवं अभिषेक जैन, सिलवानी ने संस्कृत वादविवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का विषय **आधुनिक युग में संस्कृत की उपादेयता** पर आधारीत था।

इस उपलब्धी के लिए उक्त दोनों छात्रों को जैनपथ-प्रदर्शक परिवार एवं महाविद्यालय परिवार की ओरसे हार्दिक बधाई !

फैडरेशन शाखा द्वारा 7 गाँवों में सामग्री वितरण

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, छिन्दवाड़ा के सदस्यों ने जिले के आस-पास 7 गाँवों में गरीब एवं असहाय लोगों को दैनिक उपयोगी वस्तुओं का वितरण किया। जिसमें बच्चों की यूनिफार्म, स्वेटर, कम्बल, पैन्ट-शर्त, साडियाँ, फल, भोजन आदि की सामग्री मुख्यरूपसे वितरित की गई।

फैडरेशन सूचना

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 27 **वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 25 दिसम्बर से 29 दिसम्बर** 2003 तक द्रोणगिरी जिला-छतरपुर (म.प्र.) में सम्पन्न हो रहा है। एतदर्थ फैडरेशन की समस्त शाखायें अपनी-अपनी वार्षिक रिपोर्ट 15 **दिसम्बर** 2003 तक केन्द्रिय कार्यालय, जयपुर को अवश्य भेजें। **– प्रबन्धक – अ.भा.जैन युवा फैडरेशन**

रविवारीय गोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर की साप्ताहिक गोष्ठीयों की श्रृंखला में दिनांक 15 नवम्बर 2003 को **पंचभाव : एक चिंतन** नामक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता ब्र. विमलाबहनजी, जबलपुर ने की। गोष्ठी का संचालन प्रयंक जैन, रहली एवं संयोजन चन्द्रप्रभात जैन, बडामलहरा ने किया। अन्त में श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से संदीप जैन एवं शास्त्री वर्ग से अभिषेक जैन, सिलवानी को चुना गया।

यहीं पर दिनांक 23 नवम्बर 2003 को **कर्मसिद्धान्त : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री राजूभाईजी जैन, कानपुर ने की। गोष्ठी का संचालन रवि जैन, पिड़ावा एवं संयोजन रवीश गाँधी, घाटोल ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सत्येन्द्र मिरकुटे तथा निकलंक जैन, कोटा को चुना गया। **ह्न नीरज जैन, खड़ैरी**

परीक्षा तिथि निश्चित

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राजस्थान) की शीतकालीन परीक्षाएँ दिनांक **27, 28 एवं 30 जनवरी, 2004** को सम्पन्न होने जा रही हैं। सम्बन्धित परीक्षा केन्द्रों को दो माह पूर्व छात्रों के प्रवेश-फार्म डाक से भेजे जा चुके हैं। जिन केन्द्रों को अभी तक प्रवेश-फार्म प्राप्त नहीं हुए हैं, वे तत्काल पत्र लिखकर परीक्षा फार्म मँगा लेवे तथा उन्हें भरकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय, जयपुर को शीघ्र भिजवा देवें।

ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक : परीक्षा विभाग

हमारे यहाँ उपलब्ध महत्त्वपूर्ण नये प्रकाशन

ग्रन्थ का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
1. समाधीतन्त्र एवं इष्टोपदेश	आचार्य पूज्यपाद	35/-
2. अनुभव प्रकाश प्रवचन	आ.सत्पुरुष कानजीस्वामी	25/-
3. अष्टपाहुड प्रवचन	आ.सत्पुरुष कानजीस्वामी	25/-
4. सत्य की खोज(गुजराती)	डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल	25/-
5. सत्य की खोज(अंग्रेजी)	डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल	25/-
6. समयसार का सार	डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल	25/-
7. शलाका पुरुष (पूर्वार्द्ध)	पं. रतनचन्दजी भारिल्ल	25/-
8. हरिवंश कथा	पं. रतनचन्दजी भारिल्ल	30/-
9. सम्यग्दर्शन	पं. रतनचन्दजी भारिल्ल	15/-
10. योगसार(योगीन्दुदेव कृत)	ब्र. यशपालजी जैन	05/-
11. नियमसार कलश (पद्या.)	पं. अभयकुमारजी शास्त्री	10/-
12. क्रमबद्धपर्याय निर्देशिका	पं. अभयकुमारजी शास्त्री	10/-
13. जैन नर्सरी(हिन्दी)	डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया	08/-
14. जैन नर्सरी(अंग्रेजी)	डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया	10/-
15. उपसर्गजयी सुकुमाल	ब्र. विमलाबेन	09/-
16. शीलवान सुदर्शन	ब्र. विमलाबेन	08/-
17. जिनेन्द्र अष्टक (मराठी)	पं. मधुकर गडेकर पं. मनोहर मारवडकर	20/-

पत्राचार जैनधर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम - 2004

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित **जैनविद्या संस्थान, भट्टारकजी की नसियाँ, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-04** द्वारा निर्धारित उपर्युक्त पाठ्यक्रम भारत स्थित उन अध्ययनार्थियों के लिये होगा जिन्होंने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसका माध्यम हिन्दी भाषा होगा। पाठ्यक्रम का सत्र 1 जनवरी, 2004 से 31 दिसम्बर 2004 तक रहेगा। निर्धारित आवेदन-पत्र जयपुर कार्यालय से मंगवाकर शीघ्रातिशीघ्र भेजें। **- संयोजक, डॉ. कमलचन्द सोगाणी**

पाठशाला का सफल संचालन

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ श्री महावीर दिग. जैन मन्दिर में पण्डित उदयमणिजी शास्त्री, भिण्ड द्वारा बालबोध पाठमाला एवं पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री, अहमदाबाद द्वारा वीतराग-विज्ञान पाठमाला की कक्षाएँ प्रत्येक रविवार को संचालित हो रही है।

श्रीमती ज्योती जैन द्वारा भी प्रतिदिन बालकक्षा का आयोजन सफलतापूर्वक हो रहा है। सभी कक्षाओं में लगभग 55-50 छात्रों की उपस्थिति उल्लेखनीय है। **ह्न प्रवेश शास्त्री, करेली**

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

लासूर्णे (महा.) : यहाँ दिपावली अवकाश के अवसर पर दिनांक 15 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2003 तक पन्द्रह दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्र पण्डित विजयकुमारजी बोरालकर, वाघजली के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में समयसार तथा रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर सारगर्भित प्रवचन हुए। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति का आयोजन हुआ तथा रात्रि में प्रवचनोपरान्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। **ह्न राजेन्द्र दोशी**

पुण्यस्मृति में प्राप्त दानराशियाँ

1.श्री यशंवतजी छाजेड़ की स्मृति में उनकी बड़ी बहन ब्र. जमनाबेन, देवलाली द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को 502 रूपये प्राप्त हुए।

2.स्व. मंगलाबेन लाभशंकर मेहता, राजकोट की स्मृति में श्रीमती नलीनीदेवी, मुंबई द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 251 रूपये प्राप्त हुए।

3.श्री मधुसूदन उर्फ राजाभाऊ जैन की स्मृति में अनूज मधुसूदन जैन, परतवाड़ा द्वारा वीतराग-विज्ञान को 101 रूपये प्राप्त हुए।

4.स्व. श्री योगेश जैन, रामगंजमण्डी की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 101 रूपये प्राप्त हुए।

5.श्रीमती गुणमालाजी जैन धर्मपत्नी हीरालालजी जैन की स्मृति में पुनीत जैन, जयपुर द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 100 रूपये प्राप्त हुए।

उक्त सभी दातारों का **जैनपथप्रदर्शक** एवं **वीतराग-विज्ञान** परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार ८०

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

आज से 25 वर्ष पहले ही मैंने अपनी क्रमबद्धपर्याय पुस्तक में यह बात लिखी थी कि जैनदर्शन को चाहे अकर्तावादी कहो या स्वकर्ता– वादी या फेरफार नहीं करता है – ऐसा कहो – तीनों का एक ही अर्थ है। अकर्तावाद में स्व के कर्ता का निषेध नहीं है; अपनी पर्यायों के कर्तापने का भी निषेध नहीं है।

अब इन गाथाओं के समग्रभाव के निष्कर्ष के कथनरूप कलशकाव्य कहते हैं –

एकस्य वस्तु न इहान्यतरेण सार्धं
संबंध एव सकलोऽपि यतो निषिद्धः।
तत्कर्तृकर्मघटनास्ति न वस्तुभेदे
पश्यन्त्ववकर्तृं मुनयश्च जनाश्च तत्त्वम्।।201।।

क्योंकि इस लोक में एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ सभीप्रकार के संबंधों का निषेध किया गया है; इसलिए जहाँ वस्तुभेद है, वहाँ कर्ता–कर्मपना घटित नहीं होता। इसप्रकार हे मुनिजनों एवं लौकिक– जनो ! तुम तत्त्व को अकर्ता ही देखो। तात्पर्य यह है कि भगवान आत्मा पर का अकर्ता ही है – ऐसा जानो।

अब इसके बाद 202 वाँ कलशकाव्य कहते हैं कि –

ये तु स्वभावनियमं कलयंति नेम–
मज्ञानमग्नमहसो बत ते वराकाः।
कुर्वन्ति कर्म तत एव हि भावकर्म–
कर्ता स्वयं भवति चेतन एव नान्यः।।202।।

अत्यन्त खेदपूर्वक आचार्य कहते हैं कि अरे ! जो लोग इस वस्तु– स्वभाव के नियम को नहीं जानते हैं; अज्ञान में डूबे हुए वे बेचारे कर्मों को स्वयं करते हैं; इसलिए भावकर्म के कर्ता होते हैं। भावकर्मों का कर्ता चेतन स्वयं ही है, अन्य कोई नहीं। तात्पर्य यह है कि अज्ञान अवस्था में अज्ञानी आत्मा चेतन कर्मों का कर्ता होता है।

इसप्रकार यहाँ सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की चर्चा की।

चौबीसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम में सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की चर्चा चल रही है। आचार्यश्री ने कर्ताकर्म अधिकार के बाद पुनः 320 वी गाथा में इस संबंध में अपने विचार व्यक्त किए कि यह भगवान आत्मा आस्रव, बंध और मोक्ष का कर्ता–भोक्ता नहीं है, मात्रा ज्ञाता ही है। इस संबंध में उदाहरण भी दिया कि जिसप्रकार हमारी दृष्टि अर्थात् आँख परपदार्थों को मात्रा देखती–जानती ही है, उन्हें करती या भोगती नहीं है; उसीप्रकार यह भगवान आत्मा भी परपदार्थों को मात्रा जानता–देखता है, उनका कर्ता–भोक्ता नहीं है।

जिसप्रकार ईंधन अग्नि का कर्ता है, लोहे का गोला भोक्ता है और आँख अग्नि को मात्रा जानती है; उसीप्रकार यह आत्मा रागादि भावों का ईंधन के समान न तो कर्ता है, लोहे के गोले के समान न ही भोक्ता है; वह तो आँख के समान मात्र जानता–देखता है।

इसप्रकार अभी तक यह चर्चा की कि आत्मा कर्मों का कर्ता नहीं है, भोक्ता नहीं है। अब इस व्याख्यान में इस कथन पर चर्चा करना है कि कर्म आत्मा को करते हैं या नहीं ?

भारत में एक सांख्यमत है, जो ऐसा मानता है कि प्रकृति और पुरुष, ये दो तत्त्व हैं। पुरुष निष्क्रिय अकर्ता है, सब कुछ प्रकृति ही करती है। उसी सांख्य मत के समान जैनियों में भी कुछ ऐसी मान्यता– वाले लोग हैं, जो यह मानते हैं कि कर्म ही जीव को रुलाते हैं, खान–पान आदि कराते हैं और पुण्य–पाप संबंधी जितने कार्य होते हैं, वे सब कर्म ही कराते हैं।

गाथा 332 से 344 तक इस संबंध में जो विषय स्पष्ट किया गया है, उसका भाव इसप्रकार है कि कुछ जैनी ऐसा मानते हैं कि निद्रादर्शनावरण कर्म के उदय से नींद आती है, दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से हम जाग जाते हैं, सातावेदनीय कर्म के उदय से लौकिक सुख होता है, असातावेदनीय कर्म के उदय से दुख होता है, स्त्रीवेद का उदय होने पर पुरुष के साथ रमण करने की इच्छा होती है, पुरुषवेद कर्म का उदय होने पर स्त्री के साथ रमण करने की इच्छा होती है। उनके अनुसार आत्मा कुछ नहीं करता है, जितने भी पुण्य–पाप के कार्य होते हैं, उन सबका कर्ता कर्म ही है।

ऐसी मान्यतावाले जैनियों के लिए आचार्य अमृतचन्द्र कलश 205 में कहते हैं –

माऽकर्तारममी स्पृशन्तु पुरुषं सांख्या इवाप्यार्हताः
कर्तारं कलयंतु तं किल सदा भेदावबोधादधः।
ऊर्ध्वम् तूद्भतबोधधामनियतं प्रत्यक्षमेनं स्वयं
पश्यन्तु च्युतकर्तृभावमचलं ज्ञातारमेकं परम्।।205।।

आर्हत् मत के अनुयायी अर्थात् जैन भी, आत्मा को सांख्यमतियों की भांति अकर्ता मत मानो; भेदज्ञान होने से पूर्व उसे निरन्तर कर्ता मानो और भेदविज्ञान होने के बाद उद्धत ज्ञानधाम में निश्चित इस स्वयं प्रत्यक्ष आत्मा को कर्तृत्व रहित, अचल, एक परमज्ञाता ही देखो।

बहुत ही मार्मिक कलश है। यह कलश वर्तमान के समस्त विवादों को भी सुलझानेवाला है।

अभी तक तो हम यह समझ रहे थे कि आचार्य अगले कदम पर यह कहेंगे कि आत्मा पर को जानता भी नहीं है; लेकिन आचार्य तो यहाँ यह कह रहे हैं कि आत्मा को मात्रा अकर्ता मत मानो, नहीं तो सांख्य जैसे हो जाओगे। उसे अज्ञान अवस्था में कथंचित् कर्ता मानो तथा भेदज्ञान होने के बाद उसी आत्मा को अकर्ता मानो।

कालभेद करके आचार्य ने कहा है कि जबतक भेदविज्ञान नहीं हुआ है, तबतक अज्ञान अवस्था में आत्मा को कर्ता मानो

और ज्ञान अवस्था में आत्मा को अकर्ता मानो।

ध्यान रहे कि यहाँ अज्ञान अवस्था में कर्ता मानने की बात रागादिभावों के बारे में है न कि पर को कर्ता मानने के संबंध में।

इसी बात को जयचन्दजी छाबड़ा भावार्थ में इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

इसलिए आचार्यदेव उपदेश देते हैं कि सांख्यमतियों की भांति जैन आत्मा को सर्वथा अकर्ता न मानो; जबतक स्व–पर का भेदविज्ञान न हो, तबतक तो उसे रागादि का, अपने चेतन रूप भावकर्मों का कर्ता मानो और भेदविज्ञान होने के बाद शुद्ध विज्ञानघन, समस्त कर्तृत्व के भाव से रहित, एक ज्ञाता ही मानो।

इसी बात को बनारसीदासजी ने भी डंके की चोट लिखा है, जो इसप्रकार है –

ग्यानभाव ग्यानी करै, अग्यानी अग्यान।
दर्वकर्म पुद्गल करै, यों निहचै परवान।।17।।

प्रश्न – यहाँ अज्ञान अवस्था में रागादि का कर्ता मानने का जो कथन किया है, वह कथन निश्चयनय का है या व्यवहारनय का है ?

उत्तर – यह निश्चयनय का कथन है, क्योंकि व्यवहारनय से तो रागादि का कर्ता पर है, कर्मोदय है।

आत्मा अज्ञान अवस्था में रागादिभावों का कर्ता है और ज्ञान अवस्था में अकर्ता है – ये दोनों ही कथन निश्चयनय के हैं और प्रमाण से यह आत्मा रागादि भावों का कथंचित् कर्ता है तथा कथंचित् अकर्ता है।

प्रश्न – आपने अज्ञान अवस्था में कर्ता और ज्ञान अवस्था मे अकर्ता माना, ये तो दो भिन्न–भिन्न अवस्थाएँ हैं, जबकि दोनों नय एक ही समय में लगना चाहिए।

उत्तर – वास्तव में अज्ञान अवस्था में अज्ञानभाव का कर्ता माना है और ज्ञानी के अज्ञानभाव अर्थात् मिथ्यात्व और अनन्तानुबंधी राग–द्वेष तो हैं नहीं, इसलिए ज्ञानी को उनका कर्ता मानने का सवाल ही नहीं है।

प्रश्न – ज्ञानी अज्ञानभावों का कर्ता नहीं है, ऐसा आप कैसे कह रहे हो ? उनके भी तो अज्ञानभाव होते हैं ?

उत्तर – नहीं; ज्ञानी के मिथ्यात्व संबंधी रागादि नहीं हैं, व मिथ्यात्व सहित रागादि ही अज्ञानभाव की श्रेणी में आते हैं और मिथ्यात्व के बिना प्रत्याख्यानावरण व अप्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से जो रागादि होते हैं, वे अज्ञानभाव के खाते में नहीं आते।

प्रश्न – चारित्रामोह के उदय से जो रागादि चौथे गुणस्थान में होते हैं, उनका कर्ता कौन है ? इन रागादि का कर्ता अज्ञानी को तो कह नहीं सकते; क्योंकि चौथे गुणस्थानवाले तो ज्ञानी हैं।

उत्तर – प्रवचनसार में इसका उत्तर देते हुए आचार्य कहते हैं कि कर्तानय से आत्मा उनका कर्ता है और अकर्तानय से आत्मा उनका कर्ता नहीं है।

यः परिणमति स कर्ता – इस नियम के अनुसार रागादिरूप भगवान आत्मा स्वयं ही परिणमित हुआ है; इसलिए कर्तानय से वह कर्ता है और उसी समय इनमें एकत्वबुद्धि नहीं है; इसलिए उसी समय अकर्तानय से उनका कर्ता नहीं है, मात्रा ज्ञाता है।

प्रश्न – यह तो प्रवचनसार की बात है ?

उत्तर – देखो भाई ! बात चाहे प्रवचनसार की हो या समयसार की, लेकिन नय लगाकर लिखी है, तो बिल्कुल सत्य है।

समयसार में भी लिखा है कि अशुद्धनिश्चयनय से भगवान आत्मा रागादि का कर्ता है।

इसप्रकार पूर्वोक्त कलश में कहा कि हे जैनियो ! तुम सांख्यों के समान भगवान आत्मा को रागादि का सर्वथा अकर्ता मत मानो।

सांख्यों के पक्ष के विपरीत एक बौद्धों का पक्ष है। हम जैनी तो कर्ता और भोक्ता के संबंध में आत्मा को रागादिक का कथंचित् कर्ता– भोक्ता मानते हैं और कथंचित् अकर्ता– अभोक्ता; लेकिन बौद्धों का मत है कि आत्मा कर्ता तो है, किन्तु वह भोक्ता नहीं है।

बौद्ध क्षणिकवादी होने से कहते हैं कि जिसने किया, वह तो उसी क्षण समाप्त हो गया; अतः करनेवाला अगले क्षण उसे किसप्रकार भोगे? इसलिए बौद्धों के अनुसार जो कर्ता है, वह भोक्ता नहीं है।

वे जैनी इन बौद्धों के समान ही हैं, जो कहते हैं कि आत्मा रागादि का कर्ता तो हैं, लेकिन भोक्ता नहीं है। जबकि आत्मा अज्ञान अवस्था में मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी आदि रागादि का कर्ता–भोक्ता है और ज्ञान अवस्था में अप्रत्याख्यानावरणादि संबंधी रागादि का कर्ता–भोक्ता है; इसलिए कर्ता और भोक्ता दोनों है। **(क्रमशः)**

गजपंथा से ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर लिखते हैं कि –

समयसार का सार पढ़ना प्रारंभ किया। पूर्व में सुना, पढ़ा, विचार किया, चिंतन किया - वही वस्तुस्वरूप सरल-सुबोध प्रवाही भाषा में आपने लिखकर अध्यात्म को सुन्दर शब्द दिये। लगता है अध्यात्म का उद्यान खिल गया, उसमें विहार करने से अध्यात्म के आनंद का मजा आता है। भाव समझमें आने पर तो मन उसी के साथ झूमता है।

जीवन भर अध्यात्म पर आपने लेखन कर खुद की स्वाध्याय साधना तो की ही है, साथ में जिज्ञासु जीवों का उपकार भी किया है। विशाल अध्यात्मसागर को इस ग्रन्थ में समेटकर आपने अल्पबुद्धि, व्यस्त-त्रस्त जीवों के लिये संक्षिप्त में सारा सार भर दिया है। समाज पर आपका उपकार है।

अधिक क्या कहें, हम आपके आभारी हैं।

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये 25 प्रवचन **समयसार का सार** नामक 400 पृष्ठीय पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक 25/- रुपये में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) से प्राप्त की जा सकती है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

अष्टाह्निका पर्व सानन्द सम्पन्न

1. वाशिम(महा.) : यहाँ दिनांक 1 से 8 नवम्बर 2003 तक अष्टाह्निका पर्व के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जवाहर कॉलोनी में ब्र. कैलाशचन्दजी जैन, अचल के प्रात: नियमसार, दोपहर में प्रवचनसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुए। जिसका लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ। इससे पूर्व आपके द्वारा खतौली, कोटा, टीकमगढ़ आदि स्थानों पर भी प्रवचन, कक्षा, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

2. शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के उपलक्ष्य में पण्डित प्रशान्तकुमारजी काले, शास्त्री के प्रात: योगसार तथा रात्रि में ज्ञाणार्नव ग्रन्थ पर सारगर्भित व्याख्यान सम्पन्न हुए। इसके अतिरिक्त पण्डित रमेशचन्दजी महाजन द्वारा दोपहर में तत्त्वचर्चा, सायंकाल में बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति का भी आयोजन किया गया।

3. सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के उपलक्ष्य में श्री सुभाषचन्द प्रवीणकुमार जैन, अलवर वालों की ओर से श्री पंचमेरु-नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधी-विधान के सम्पूर्ण कार्य श्री पूरनचन्दजी जैन द्वारा सम्पन्न कराये गये। **ह्न छोटेलाल जैन**

4. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के उपलक्ष्य में पण्डित पद्मचन्दजी अजमेरा के श्री दिग. जैन मन्दिर, चांदनी चौक में प्रात: एवं हाथीवाला मन्दिर में रात्रि को निश्चय-व्यवहार के स्वरूप पर प्रवचन तथा सायंकाल बालकक्षा का आयोजन किया गया। प्रवचन के पूर्व सामूहिक पूजन एवं दोपहर में तत्त्वचर्चा का आयोजन भी किया गया।

दिनांक 16 नवम्बर को श्री सागोदिया दिग. जैन मन्दिर में प्रौढ़ो के लिये **विनय के अभाव में मोक्षमार्ग की साधना असंभव** इस विषय पर विचारगोष्ठी का एवं शिशुवर्ग के लिये चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें अनेक पुरुष-महिला वर्ग ने तथा बालवर्ग ने उत्साह से भाग लिया। **ह्न मोहनलाल छाबड़ा**

दिसम्बर माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

3 दिसम्बर	– भगवान अरनाथ का तपकल्याणक
4 दिसम्बर	– भगवान मल्लीनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक भगवान नमिनाथ का ज्ञानकल्याणक
7 दिसम्बर	– भगवान अरहनाथ का जन्मकल्याणक
8 दिसम्बर	– भगवान संभवनाथ का तपकल्याणक
10 दिसम्बर	– भगवान मल्लीनाथ का ज्ञानकल्याणक
19 दिसम्बर	– भगवान चन्द्रप्रभ का जन्म एवं तप कल्याणक भगवान पार्श्वनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
22 दिसम्बर	– भगवान शीतलनाथ का ज्ञानकल्याणक

आयोजनों हेतु सम्पर्क करें

नागपुर (महा.) : श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर के अन्तर्गत श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, नागपुर (जेवर) द्वारा तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की अनेक गतिविधियाँ संचालित हो रही है। अबतक उनके दो वर्ष के कार्यकाल में अनेक स्थानों पर बाल संस्कार शिविरों, शिक्षण-शिविरों में कक्षा, प्रवचन एवं पूजन-विधानादि कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके हैं एवं हो रहे हैं।

तत्त्वप्रचार की सभी गतिविधियों में कार्य करने की आपकी शैली अत्यन्त सरलतापूर्ण होने से सर्वत्र ही आपके कार्य की प्रशंसा हो रही है।

यदि आप भी अपने यहाँ कोई शिक्षण-शिविर, बाल संस्कार-शिविर, शिलान्यास, पूजन-विधान, प्रवचन, कक्षा आदि का आयोजन करना/कराना चाहते हों तो हमसे निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं। अहिन्दी भाषी भी इन आयोजनों का लाभ ले सकते हैं। ध्यान रहें अनुकूलता के आधार पर ही स्वीकृति प्रदान की जा सकेगी।

पता ह्न श्री कुन्दकुन्द दिग.जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट
C/o श्री महावीर दिगम्बर जिन मन्दिर,
नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर - 440002 (महा.)
फोन ह्न (0712) 2766369, 2763105

जैन हवाई यात्री ध्यान दें।

विमानों में अब जैन भोजन की स्वतन्त्र व्यवस्था है, अत: विमान द्वारा यात्रा करनेवाले जैन साधर्मी भाई विमान परिचारिका को **जैन फूड** का ही आर्डर बुक करायें, तथा बोर्डिंग कार्ड लेते समय भी इस बात का ध्यान अवश्य दिलायें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 एवं 11 दिसम्बर, 03	दिल्ली	वेदी शिलान्यास (आत्मार्थी ट्रस्ट)
12 से 14 दिसम्बर, 03	पूना	उद्घाटन अस्पताल एवं आश्रम
17 से 23 जनवरी, 04	छिंदवाड़ा	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) दिसम्बर (प्रथम) 2003
J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127